ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 14 कुल पृष्ठ-12 27 दिसम्बर, 2018 से 2 जनवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.कृ.-15

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित विश्वविख्यात गुरुकुल कांगड़ी के प्रांगण में भव्य बलिदान समारोह का हुआ आयोजन

स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रणी नेता थे स्वामी श्रद्धानन्द

– स्वामी यतीश्वरानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व बहुआयामी था

– स्वामी आर्यवेश

सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी अध्याय का सूत्रपात किया था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यता के अनुसार ''चाहे कोई राजकुमार हो या राजकुमारी, चाहे दरिद्र की सन्तान हो, सबको तुल्य वस्त्र, खान–पान तथा आसन दिये जाने की परम्परा रही है।'' और सभी प्रकार की संकीर्णताओं से अलग हटकर समाज के सभी वर्ग एवं समुदायों के छात्र एवं छात्राओं को समान शिक्षा देने की व्यवस्था रही है। यह विचार गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने क्रियान्वित किया और एक आदर्श शिक्षा व्यवस्था समाज के समक्ष प्रस्तुत की। स्वामी श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के प्रांगण में 24 दिसम्बर, 2018 को भव्य बलिदान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रबन्ध कार्यकारिणी सभा के मंत्री व हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त संस्कृत अकादमी, उत्तराखण्ड के उपाध्यक्ष डॉ. प्रेमचन्द्र शास्त्री, राज्यमंत्री श्री विनोद कुमार आर्य, आचार्य डॉ. अखिलेश योगी, प्रो. सत्यदेव निगमालंकार, ज्वालापुर इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. रोहिताश कुंवर, गुरुकुल साइंस कॉलेज की करुणा शर्मा, गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री, सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री नवनीत परमार, नगर निगम के पार्षद

श्री नागेन्द्र राणा, आर्य विद्या सभा के उपमंत्री ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री धर्मेन्द्र आर्य एवं श्री अंकित आर्य एडवोकेट अमरोहा आदि की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। इस आयोजन के सूत्रधार एवं मुख्य संयोजक डॉ. दीनानाथ शर्मा की अध्यक्षता एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. योगेश शास्त्री डी–लिट् के कुशल संयोजन में प्रातः 10 बजे से मध्यान्ह 2 बजे तक कार्यक्रम चलता रहा। प्रातः डॉ. योगेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ के द्वारा सम्पूर्ण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। यज्ञ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य यजमान के पद पर विराजमान हुए उनके अतिरिक्त डॉ. अखिलेश योगी, गुरुकुल कांगड़ी के रजिस्टार डॉ. दिनेश भट्ट, उत्तराखण्ड सरकार में राज्यमंत्री श्री विनोद आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री धर्मेन्द्र एवं श्री अंकित आर्य आदि ने भी आहुतियाँ प्रदान की।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी एवं गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा ने कुलपताका फहराकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर विशाल शोभायात्रा का शुभारम्भ कराया। शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. दीनानाथ शर्मा जी एवं अन्य गणमान्य अधिकारियों ने किया। इस शोभा यात्रा में गुरुकुल के अध्यापकों, छात्रों तथा आर्य विद्या सभा के अन्तर्गत संचालित ज्वालापुर इण्टर कॉलेज डॉ. हरीराम आर्य इण्टर कॉलेज और गुरुकुल साइंस कालेज के छात्रों एवं अध्यापकों ने भाग लिया। शोभा यात्रा श्रद्धानन्द चौक तक पहुंची जहां अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा के पास सभा

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल कांगड़ी के प्रांगण में भव्य बलिदान समारोह का हुआ आयोजन

का आयोजन किया गया जिसे स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने सम्बोधित किया। स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह घोषणा की कि वे इस चौराहे पर एक सुन्दर पार्क बनाने के लिए सरकार पर दबाव बनायेंगे और मुझे यह विश्वास है कि यह स्थान एक दर्शनीय पार्क के रूप में विकसित होगा। उनके इस प्रस्ताव का समर्थन संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. प्रेमचन्द्र शास्त्री तथा राज्यमंत्री श्री विनोद कुमार जी ने भी किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने इलेक्ट्रानिक मीडिया के लोगों को अपने साक्षात्कार के दौरान घोषणा की कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा त्यागमूर्ति स्वामी दर्शनानन्द जायेगा।

श्रद्धानन्द चौक से शोभा यात्रा वापस विद्यालय प्रांगण में पहुंचकर एक विराट सभा में बदल गई जिसमें डॉ. प्रेमचन्द्र शास्त्री, प्रो. सत्यदेव निगमालंकार, डॉ. करुणा शर्मा आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी बीच–बीच में अपने आश्चर्यजनक कार्यक्रम प्रस्तुत करके उपस्थित जनसमूह को अत्यन्त प्रभावित किया। विदित हो कि गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थियों ने गत दिनों राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करके शील्ड प्राप्त की थी। इस शील्ड को स्वामी आर्यवेश जी ने सभी प्रतिभागियों को सामूहिक रूप से भेंटकर सम्मानित किया।

जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी के प्राचीन गौरव को बनाये रखने एवं इसके विकास के लिए आर्य समाज कोई कसर नहीं छोड़ेगा। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को लेकर जो विवाद चल रहा है उसमें स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज गुरुकुल की उन्नति एवं रक्षा के लिए विशेष प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु कुछ लोग उनके इस प्रयास में बाधा डालना चाहते हैं जो गलत है। सम्पूर्ण आर्य जगत का समर्थन स्वामी यतीश्वरानन्द जी के साथ है और किसी भी रूप में ऐसे प्रयासों को सफल नहीं होने दिया

इस अवसर पर मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा ने स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, श्री विनोद कुमार, डॉ. प्रेमचन्द्र शास्त्री जी, डॉ. करुणा शर्मा जी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, डॉ. सत्यदेव निगमालंकार एवं अन्य अतिथियों को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। डॉ. विक्रम विद्यालंकार ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में एक कविता पढ़ी और उसे स्वामी आर्यवेश जी को भेंट किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व के बहुआयामी स्वरूप पर प्रकाश डाला और बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वतंत्रता सेनानी, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा, हिन्दी भाषा के प्रबल प्रचारक, शुद्धि आन्दोलन के सूत्रधार, सौहार्द के समर्थक, त्याग मूर्ति एवं उच्चकोटि के बलिदानी थे, उनका कद तत्कालीन सभी नेताओं से ऊँचा था। वे निर्भीक एवं स्पष्टवादी संन्यासी थे। अपना सर्वस्व गुरुकुल एवं राष्ट्र के लिए समर्पित करके उन्होंने एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया था। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा तथा उनके समस्त सहयोगियों एवं गुरुकुल के सभी अध्यापकों, कर्मचारियों को इस शानदार कार्यक्रम के लिए साधुवाद दिया तथा गुरुकुल की प्रगति एवं व्यवस्था के लिए भी भूरि–भूरि प्रशंसा की। सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री नवनीत परमार ने अन्त में सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. योगेन्द्र शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ किया। उनके सहयोग में लगे श्री अंकित आर्य एडवोकेट, श्री लोकेश आर्य, श्री अशोक आर्य एवं अन्य अध्यापक भी प्रशंसा के पात्र हैं। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की भी सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

बच्चों का व्यवहार ठीक करने से पहले बड़े अपना व्यवहार ठीक करें

– सीताराम गुप्ता

घर में सबसे छोटा सदस्य है मेरा सवा–डेढ़ साल का पौत्र। वो मौका लगते ही झाड़ू उठा लाता है और लगता है फर्श पर झाड़ू लगाने की कोशिश करने। कभी वाइपर उठा लाता है और उसे चलाने लगता है। कोई भी कपड़ा मिल जाए उसे उठाकर पानी की बाल्टी में या जहाँ कहीं भी पानी मिले उसमें डुबोकर गीला कर लेता है और कभी फर्श पर पौंछा लगाने लगता है तो कभी मेज साफ करने लगता है। गाड़ी में अगली सीट पर बैठता है तो कभी रेडियो का वॉल्यूम बढ़ा देता है तो कभी एसी का। कभी वाइपर का लीवर घुमा देता है तो कभी गियर रॉड खींचने का प्रयास करता है। वो ऐसा क्यों करता है? वो ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वो हम सबको ऐसा करते हुए देखता है और उसे खुद करने की कोशिश करता है। यह अत्यन्त स्वाभाविक है। बच्चा खाली या शान्त नहीं बैठ सकता। उसे कुछ न कुछ खेल करना ही है। घर के सदस्यों के काम और दूसरे क्रियाकलापों की नकल करने से अच्छा खेल उसके लिए और कोई हो ही नहीं सकता।

प्रश्न उठता है कि क्या बच्चे के खेलने के लिए उसके पास खिलौने नहीं हैं जो वो घर की दूसरी चीजों से खेलने की कोशिश करता है? हैं, पर्याप्त हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि यदि उसके चारों ओर बहुत सारी चीजें रखी हों तो वो उन सबसे भी खेलेगा। अपने आसपास की सभी चीजें उसे आकर्षित करती हैं। घर के सदस्य जिन चीजों का प्रयोग करते हैं और जैसे करते हैं वो भी उन सभी चीजों का उन्हीं की तरह या अपने तरीके से प्रयोग करना चाहता है। यही उसका खेल है। बच्चा खिलौनों से भी प्रायः तभी खेलता है जब दूसरे लोग उनसे खेलना शुरू करते हैं। वास्तविकता ये भी है कि लोग अपने बच्चों के लिए जो खिलौने खरीदते हैं वो बच्चों की पसन्द के नहीं अपनी पसन्द के खरीदते हैं। वो खिलौने लाते हैं और बच्चे को बतलाते हैं कि ऐसे खेलो। लोग प्रायः खाने–पीने की चीजें भी बच्चों की पसन्द के बजाय अपनी पसन्द की ही लाते हैं। हम बच्चों से अपनी बात मनवाने या अपनी पसन्द उस पर थोपने का प्रयास करते ही रहते हैं।

बच्चा जब बड़ों की पसन्द के खिलौनों से खेलेगा, उनकी पसन्द की चीजें खाएगा तो ये भी स्वाभाविक ही है कि उनकी पसन्द या जरूरत के दूसरे काम भी उनकी तरह ही करने की कोशिश करेगा क्योंकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यही तो हम उसे सिखा रहे होते हैं। और यदि ऐसा करने से उसे रोकेंगे तो मचलने लगेगा। रोएगा। रूठेगा। उसका ये व्यवहार बड़ों से प्रश्न करना ही है कि जब आप सब लोग ये सब कर रहे हो तो मेरे करने में क्या बुराई है? उसका व्यवहार बिल्कुल ठीक है। यदि आप अपने सामने नहीं करने देंगे तो वो आँख बचाकर या पीछे से करेगा। तो नन्हे बच्चों को रोकने की बजाय वो जो करें करने दीजिए। बस उनकी सुरक्षा का ध्यान रखिए। उन्हें सर्दी–गर्मी, आग–पानी व गन्दगी से बचाने का प्रयास करते रहिए। जो चीजें उनके लिए खतरनाक या कोई दुर्घटना पैदा करने वाली हो सकती हों उनकी पहुँच से दूर कर दीजिए। खतरनाक रसायन व दवाएँ उनकी पहुँच से बहुत ऊपर रखिए।

यदि बच्चा इधर–उधर से कोई गलत चीज उठाकर मुँह में डालता है तो उसे रोकना जरूरी है। इसके लिए उसका पेट भरा होना भी जरूरी है। उसे सही समय पर उचित आहार दीजिए लेकिन खाने–पीने के मामले में भी बच्चे कम परेशान नहीं करते। अधिकांश बच्चे प्रायः दूध पीने या खाने से बचने की कोशिश करते हैं और जब घर के दूसरे या बड़े सदस्य भोजन करते हैं तो उनके भोजन में से उठाकर खाने का प्रयास करते हैं। ये तो बड़ी अच्छी बात है। इस बात का लाभ उठाना चाहिए। जब घर के बड़े सदस्य कुछ भी खाने के लिए बैठें तो ऐसा भोजन लेकर बैठें जो बच्चों के लिए भी अनुकूल हो। खुद भी खाएँ और बच्चों को भी खिलाएँ। जिन घरों में तीसरी या चौथी पीढ़ी के बुजुर्ग जैसे दादा–दादी, नाना–नानी या परदादा–परदादी आदि होते हैं बच्चों के लिए हर तरह से बड़ा ठीक रहता है। बुजुर्ग प्रायः दलिया–खिचड़ी आदि लेते हैं तो बच्चा भी उनके साथ ये सब खाद्य पदार्थ ले लेता है जो उसके लिए ठीक रहते हैं।

इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है शिष्टाचार व नैतिकता के विकास का। अनुकरण अथवा नकल का हम सबके जीवन में बहुत महत्त्व है। नकल के बिना हम सीख ही नहीं सकते लेकिन गलत चीजों की नकल करना घातक है। बच्चा भी अनुकरण से ही सीखता है। वह बड़ों का ही अनुकरण करता है। अपने अंदाज में वो बड़ों की ही भाषा बोलता है और बड़ों की तरह ही बोलता है। हम शिष्टाचार का यथेष्ट पालन न करें और बच्चों को समझाएँ कि वो शिष्टाचार का पालन करें तो ये सम्भव नहीं। बच्चों को शिष्ट बनाना है तो माता–पिता को शिष्ट बनना होगा। हम घर में एक दूसरे से व मेहमानों या अन्य आगंतुकों से जैसा व्यवहार करते हैं अथवा जैसी भाषा बोलते हैं बच्चा भी उसी का अनुकरण करेगा। अभिवादन भी उन्हीं की तरह करेगा। लहजा उसका अपना होता है लेकिन भाव बड़ों का ही आ जाता है। माता–पिता व घर के अन्य सदस्यों में जैसी आदतें होती हैं बच्चा बड़ी सूक्ष्मता से न केवल उनका निरीक्षण करता रहता है अपितु उनकी नकल भी करता रहता है।

यदि बच्चों में सचमुच अच्छी आदतें डालनी हैं और उन्हें सुसंस्कृत बनाना है तो माता–पिता को भी स्वयं में अच्छी आदतें डालनी होंगी और सुसंस्कृत बनना होगा। बच्चा जब हमारे व्यवहार अथवा व्यक्तित्व में कमी अथवा दोगलापन पाता है तो वह विचलित हो जाता है। हमारी कथनी व करनी का अन्तर या किसी के सामने व उसकी पीठ पीछे उसके प्रति व्यवहार या आचरण में अन्तर बच्चे पर सबसे ज्यादा बुरा प्रभाव डालता है। वह समझ ही नहीं पाता कि कथनी ठीक थी या करनी ठीक है। उसे पता नहीं चल पाता कि किसी के सामने उसके बारे में कही गई बात ठीक थी या उसके जाने के बाद पहली बात के विपरीत कही गई बात उचित है। उसकी प्रशंसा या चापलूसी ठीक थी या उसकी आलोचना ठीक है। बच्चे के सम्पूर्ण आचरण व उसके नैतिक चरित्र के विकास में इन बातों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। हम बात–बात पर गुस्सा करते हैं या झूठ बोलते हैं तो बच्चा भी ऐसा ही करेगा। हमारे व्यवहार अथवा आचरण में दोगलापन है तो बच्चे के व्यवहार व आचरण में भी वह जल्दी ही आ जाएगा।

प्रायः ऐसा होता है कि माता–पिता या घर के अन्य सदस्यों में कुछ कमियाँ होती हैं। यह स्वाभाविक है लेकिन कोई माता–पिता या घर का अन्य सदस्य ये नहीं चाहता कि उनके बच्चों में भी ये कमियाँ आएँ। वो बच्चों को उन कमियों से बचाने के लिए पूरा जोर लगा देते हैं। यहाँ स्वयं को ठीक करने की बजाय बच्चों को ठीक करने पर जोर होता है। इसके लिए समझाने से लेकर डाँटने–डपटने व मारने–पीटने तक सभी तरीके आजमाए जाते हैं लेकिन बच्चों पर इसका सकारात्मक नहीं नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। बच्चों को जिन बातों के लिए जोर देकर रोकने का प्रयास किया जाता है बच्चे उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं और जो हमारी सोच होती है वही अंततोगत्वा हमारे जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित हो जाती है। बच्चे भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहते।

गुण हों या अवगुण ऊपर से नीचे की ओर संक्रमित होते हैं। आपने सुना ही होगा कि जैसा बाप वैसा बेटा। जैसा राजा वैसी प्रजा। जहाँ राजा अथवा जनप्रतिनिधि अपने कर्त्तव्य का ठीक से पालन नहीं करता वहाँ प्रजा का भी अपने कर्त्तव्य पालन में शिथिल हो जाना अस्वाभाविक नहीं। राजनीति का स्तर गिरने का ही ये परिणाम है कि जनता में नैतिकता का निरन्तर ह्रास हो रहा है और भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता ही जा रहा है। कोई तो हो जो ऊपर से वास्तव में एक अच्छी शुरूआत करे। नेताओं की करनी और कथनी के अन्तर ने सुधार की संभावनाओं को निर्मूल कर डाला है। मात्र चीख–चीखकर लच्छेदार भाषण देने से नैतिकता का विकास असम्भव है। प्रवचन अथवा नैतिक शिक्षा की किताबें छलावे अथवा व्यापार के अतिरिक्त कुछ नहीं। बच्चे ही नहीं हम सब भी अपने परिवेश से ही ज्यादा सीखते हैं अतः परिवेश को सुधारना अनिवार्य है। यदि हम वास्तव में चाहते हैं कि हमारे बच्चों में अच्छी आदतों व सही नैतिक मूल्यों का विकास हो तो उन सभी आदतों व नैतिक मूल्यों को स्वयं माता–पिता को भी अपने अन्दर विकसित करना होगा। दूसरा कोई उपाय या विकल्प हो ही नहीं सकता।

– ए डी–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
चलभाष–9555622323

बेटी का जीवन बचाएँ

– डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

सर्वप्रथम आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान को भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों ने जिस तरह से प्रोत्साहित किया है उससे भारत में बेटियों पर हो रहे अत्याचार कम होने की सम्भावना बनी है। बेटी बचाओ अभियान के द्वारा पूरे देश में सजगता भी आई है। गर्भ में ही बेटी की हत्या कर दी जाती थी जो कि घिनौना कुकृत्य है। अपनी ही बेटी को गर्भ में मरवा देना एक महापाप है वैसा ही जैसा किसी बालक या बड़े द्वारा शस्त्र से काट कर हत्या कर देना होता है जो कि अपराध है, वैसा ही जब सन्तान गर्भ में हो उसे मार देना उसकी हत्या ही तो है। ऐसा भारत में होने लगा था इससे बालिकाओं की शिशु दर भी कम हो गई अर्थात् बेटियों की संख्या बेटों की अपेक्षा कम हो गई। यदि भ्रूण हत्या जैसा अपराध ऐसे ही चलता रहा तो बेटियाँ समाप्त ही हो जायेंगी। होता यह है कि अनेक लोग ऐसा अमानवीय कृत्य करते हैं यदि गर्भ में बालिका है जिसका कि अल्ट्रासोनोग्राफी से पता चलता है उसे गर्भ में ही गर्भपात करा मार दिया जाता है। ऐसी मानसिकता उनकी होती है जो यह चाहते हैं कि उन्हें पुत्र ही होना चाहिए पुत्री नहीं यदि ऐसी सोच है तो गलत है क्योंकि यदि उस व्यक्ति के यहाँ पुत्र ही होते रहे बड़े हो भी जायें तो उनके लिए वधु कहाँ से आयेगी। वह भी तो व्यक्ति होगा जिसके यहां गर्भ में पुत्री का पता चला होगा उसने गर्भपात नहीं कराया पुत्री हुई बड़े लाड़ प्यार से पाला होगा क्या उसका कुछ घट गया। यह मन का भ्रम है कि पुत्र से वंश चलता है पुत्री भी कम नहीं होती, आज बेटियां माता–पिता का नाम रोशन कर रही है।

पी.टी. उषा, प्रतिभा पाटिल, इन्दिरा गांधी, किरण बेदी आदि महान हस्तियाँ ऊँचे पदों पर रही हैं, जिन्होंने देश का गौरव बढ़ाया है। मदालसा, गार्गी, मैत्रेयी, पाणिनी भी महिला थी, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई व दुर्गा। भाभी को कौन नहीं जानता। आज भी बेटियां न्यायहितकारी, जिलाधिकारी, वैज्ञानिक आदि है, जिन्होंने अपने माता–पिता का परिवार का नाम रोशन किया है। आज के वैज्ञानिक प्रगति के समय में बेटा–बेटी एक समान है और शिक्षित वर्ग में दोनों को ही समान महत्व दिया जाना चाहिए। भारत अब स्वतंत्र है हमें समाज को उन्नति के पथ पर लाना चाहिए अनेक कुप्रथायें जो पहले थीं ऋषि दयानन्द ने उनका पुरजोर विरोध कर कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया। ऐसी अनेक कुप्रथायें थीं जो केवल महिलाओं के लिए ही थीं, एक सती प्रथा, दूसरी जौहर, तीसरी बाल विवाह, चौथी बालिका के जन्म लेते ही उसको मार देना, पांचवीं विधवा होने पर उनका जीवन यातनामय बना देना आदि–आदि। आज गर्भ में अल्ट्रासाउण्ड द्वारा बालिका पाए जाने पर भ्रूण हत्या करा दी जाती है। अतः यह सब बालिका होने पर ही होता है। ऐसा कर बेटी का जन्म एक अपराध बना दिया। अनेक महान लोगों ने कुप्रथाओं को रोकने हेतु इस क्षेत्र में बेटी का जीवन बचाने हेतु कार्य किये हैं।

दहेज प्रथा भी एक बहुत बड़ा अपराध है जिसे कि अनेक मूर्ख लोगों ने महत्त्व दे रखा है। बेटी वाला जब वर की तलाश करने चलता है तो अधिकतर वर पक्ष के लोग दुकानदारी करने लगते हैं, सीधे ही मांग करते हैं बहुत से लोग पहले न मांग कर वधु के घर में आने पर वधु को दहेज के लिए प्रताड़ित किया करते हैं। अतिरिक्त दहेज की मांग करते हैं न मिलने पर हत्या कर देते हैं या ऐसी स्थिति पैदा कर देते हैं कि आत्महत्या के लिए बाध्य हो जाते हैं। दहेज की मांग भी बेटी के लिए अभिशाप है। अनेक प्रकार से बेटियों की हत्या के मामले न्यायालयों में चल रहे हैं। कहीं इन्हें गला दबाकर, कहीं जलाकर, कहीं भूखा रखकर प्रताड़ित कर आत्महत्या हेतु प्रेरित किया जाता है। ऐसे में बेटियां कहां सुरक्षित हैं?

भारत में गर्भ से लेकर अन्त तक बेटी का जीवन नरक बन गया था, आर्य समज व अनेक संस्थाओं ने इस ओर ध्यान भी दिया, परन्तु आज भी बेटियों का जीवन भय के वातावरण में चल रहा है। पिता के घर से पति के घर जाकर भी बेटी अधिकांशतः दुःखी ही रहती है। इस ओर भी समाज में जागरूकता लानी आवश्यक है। आज बेटी का जीवन कष्ट में है, चाहे वह गर्भ में है, अथवा ससुराल में है। उसे अनेक प्रकार से कष्ट उठाने पड़ते हैं। बलात्कार, यौन अपराधों में वृद्धि हो रही है। दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों में बेटियों के साथ बलात्कार हो जाते हैं। ग्राम में अथवा अन्य स्थानों पर ऐसे अपराध हो जाते होंगे अनेक स्थानों पर तो पता भी नहीं चलता होगा।

बेटियों की रक्षा बेटियाँ ही कर सकती है क्योंकि महिलाओं में सास ही अधिकांशतः दहेज आदि हेतु वधु को प्रताड़ित करती है। सास भी तो किसी की बेटी है, जब बेटी जन्म लेती है तो यही उसका विरोध अधिकतर करती हैं। यह बेटी जो सास बनीं हैं अतिरिक्त दहेज की मांग करती है। यही सास बेटा होते ही कहती है कि दहेज में कार लूंगी बेटा के विवाह में खूब दहेज मिलेगा। जब ऐसी भावना आरम्भ से हो जाती है तो विवाह में दूल्हे का मोल–तोल होना स्वाभाविक है। आज दूल्हों की दुकानें लगी हुई हैं, सौदेबाजी होती है। कौन दूल्हा कितने में बिकेगा इस पर सब्जी मंडी की भांति बात चलती है। सोचें क्या ऐसे सम्बन्ध जो दहेज की बोली पर होंगे स्थायी होंगे। कदापि नहीं भले ही बेटी पराये घर जाकर कुछ न बोले लेन–देन के विषय पर तनातनी रहती है।

दहेज एक कुप्रथा है, दहेज लेना–देना दोनों ही अपराधिक श्रेणी में आने चाहिए, विवाह शादी में में दिखावा व्यर्थ के धन की बर्बादी, कोई विवाह संस्कार का विषय नहीं है। बारात की संख्या भीड़ बढ़ाना भी कोई अच्छा काम नहीं। इस प्रकार की अथाह भीड़ व दिखावे पर रोक लगानी चाहिए। विवाह वैदिक विधि से हो प्रदर्शन से रहित हो। विवाह में धन का, जन बल का प्रदर्शन दहेज और नाच–कूद, मद्यपान आदि व्यर्थ के कार्यों पर रोक लगाकर इसे सामान्य करना चाहिए। सर्वत्र एक समान विधि व नीति निर्धारित करनी चाहिए। बाराती अधिक न हो, उनकी संख्या निश्चित होनी चाहिए। कोई मद्यपान न करे, भौड़े नाच कूद न हो, बैण्ड बाजे, डी.जे. साउण्ड पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। बाजार आदि में बारातों का जुलूस निकालने पर भी रोक लगे। दहेज में सीमा निर्धारण होना चाहिए। दूल्हों की बोली पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिए। दूल्हों की दुकानदारी या सौदेबाजी अभिशाप है सम्बन्ध नहीं। वैदिक विधि का ध्यान रखना चाहिए यह सब बेटियों के हित में ही है।

बेटियों, वधुओं की हत्या न हो, भ्रूण हत्या न हो, इसके लिए वेदज्ञान का प्रकाश आवश्यक है। आर्य समाज इसके लिए सदैव प्रयत्नशील है। आर्य समाज ने इसीलिए गुरुकुल शिक्षा पर बल दिया है। वैदिक संस्कारों को करने के लिए प्रयास किये हैं। वेदों की ओर चलेंगे तो यह कालिमायुक्त कुरीतियों के बादल स्वयं ही हटने लगेंगे।

– चन्द्रलोक कालोनी, गली नं.–1, खुर्जा–203131 (उ. प्र.)

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों तथा विविध संगठनों द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर

विशाल शोभा यात्रा एवं जनसभा का आयोजन

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय एकता का लें संकल्प

– स्वामी आर्यवेश

पूरा राष्ट्र स्वामी श्रद्धानन्द जी का ऋणी रहेगा

– अनिल आर्य

आर्य समाज के महान संन्यासी, स्वतंत्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में तथा दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य युवा संगठनों द्वारा आयोजित विशाल शोभा यात्रा में भारी संख्या में आर्यजनों एवं आर्य युवकों ने भाग लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर आर्य समाज दीवान हाल की ओर से टाऊन हाल के पास स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा के समक्ष बनाये गये विशेष मंच पर अनेक गणमान्य महानुभावों ने शोभायात्रा को सम्बोधित किया। मंच का संचालन आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान मेजर डॉ. रविकान्त तथा मंत्री श्री तेजपाल मलिक ने संयुक्त रूप से करते हुए शोभायात्रा में शामिल सभी आर्य समाजों एवं युवा संगठनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्‌बोधन में जनता का आह्वान किया कि वर्तमान परिस्थितियों में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी पहले नेता एवं संन्यासी थे जिन्होंने जामा मस्जिद के मिंबर से देश की जनता को संगठित होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सिक्खों की विशाल सभा को अकाल तख्त से सम्बोधित करके और अपने क्रांतिकारी भाषण से जनता को उत्साहित करके साम्प्रदायिक सौहार्द का एक अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिल्ली वाले स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से जाना जाता था। उनका राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्तर देश के अन्य नेताओं से बहुत ऊँचा था। स्वामी आर्यवेश जी ने भारत सरकार से मांग की कि श्रद्धानन्द बलिदान भवन तथा टाउन हाल को राष्ट्रीय स्मारक बनाकर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें। मंच से श्री सुखदेव आर्य तपस्वी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, श्री केवल कृष्ण सेठी, श्री प्रवीण आर्य आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। मंच के समक्ष आर्य समाज पुलबंगश की ओर से प्रतिवर्ष की भांति प्रसाद वितरण की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसका पूरा संयोजन वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश भारती कर रहे थे। स्वामी आर्यवेश जी ने उनका विशेष धन्यवाद ज्ञापित कर उत्साहित किया। शोभा यात्रा में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् एवं आर्य वीरदल के युवकों ने अद्‌भुत खेल एवं यौगिक क्रियाएँ प्रस्तुत करके जनता को अत्यन्त प्रभावित किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से मोटरसाईकिलों का एक ग्रुप यात्रा में एक विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। शोभा यात्रा रामलीला मैदान में पहुंचकर श्रद्धानन्द बलिदान समारोह के रूप में बदल गई और वहाँ आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से अनेक वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी आर्यवेश जी के साथ सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र आर्य, श्री रामकुमार आर्य आदि भी मंच पर उपस्थित रहे।

वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि तथा आत्मा की उन्नति होती है – स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पूरे राष्ट्र में लागू किया जाये – स्वामी प्रणवानन्द

जीवन में सुख व शांति प्राप्त करने के लिए ईश्वर उपासना करो – डॉ. महावीर अग्रवाल

आर्य शिक्षा के प्रमुख केन्द्र वेद विद्यालय, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ गत 16 दिसम्बर, 2018 को हर्षोल्लास एवं समारोह पूर्वक सम्पन्न हो गया। निरन्तर दो सप्ताह तक चले चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति 16 दिसम्बर, 2018 को प्रातः 10 बजे की गई। तत्पश्चात् सभा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। गुरुकुल के संचालक एवं श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित वार्षिकोत्सव में यज्ञ के ब्रह्मा पद को संस्कृत विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के पूर्व कुलपति एवं पतंजलि योग विश्वविद्यालय के वर्तमान प्रतिकुलपति आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् डॉ. महावीर अग्रवाल जी ने सुशोभित किया। उनके ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ अत्यन्त श्रद्धा, समर्पण एवं व्यवस्था के साथ संचालित हुआ। अनेक गणमान्य परिवारों ने यजमान बनकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की और गुरुकुल हेतु दान देकर पुण्य प्राप्त किया।

8 व 9 दिसम्बर, 2018 को श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के तत्वावधान में गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं की विविध प्रतिभाओं की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका संयोजन गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय जी ने किया। प्रतियोगिता में अनेक गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लेकर अपनी उच्चकोटि की प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। गुरुकुल परिषद् की ओर से समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, पारितोषिक स्वरूप राशि एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसी के साथ सभी प्रतिभागियों एवं आमंत्रित विद्वानों को मार्ग व्यय एवं दक्षिणा देकर सम्मानित किया गया। यह प्रतियोगिता स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में 15 दिसम्बर, 2018 को महत्त्वपूर्ण आर्य सम्मेलन आयोजित हुआ तथा आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से महिला सम्मेलन का शानदार आयोजन किया गया।

उत्सव के समापन समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, गुरुकुल गोमत के आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी, पं. सत्यपाल पथिक जी आदि महानुभावों ने भी अपने विचार रखे। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. महावीर जी ने अपने उपदेश में प्रेरणा दी कि यदि जीवन में सुख व शांति प्राप्त करनी है और जीवन को पूर्ण बनाना है तो शत्रुओं के विनाशक इन्द्र अर्थात् परमात्मा का गान करो। उसकी उपासना करो। उन्होंने कहा कि प्रभु का गान धीमे स्वर से नहीं अपितु उच्च स्वर में सबको मिलकर करना चाहिए। ईश्वर के भक्तों व याज्ञिकों का मन, हृदय एवं भावनाएं एक समान होनी चाहिए। हमारी भावनाओं में निष्ठा तथा श्रद्धा होनी चाहिए। परमात्मा से बड़ा कोई पिता नहीं है। अतः उस परमपिता की उपासना ही सुख व शांति दे सकती है।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने धन्यवादी भाषण में कहा कि पूरे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को लागू किया जाना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मनुष्य के जीवन का सर्वांगीण विकास कर सकती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले व अंग्रेज सरकार द्वारा सोची–समझी चाल एवं षड्यन्त्र के साथ लागू की गई थी। वे चाहते थे कि भारत की आने वाली संतानें अंग्रेजियत की मानसिकता, जीवनशैली, वेशभूषा, खान–पान को दृढ़ता के साथ अपने जीवन में यदि अपना लेती हैं तो सैकड़ों साल तक अंग्रेज भारत को मानसिक रूप से गुलाम बनाकर रख सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि ऐसी शिक्षा प्रणाली को देश में चलाये रखना एक विडम्बना की बात है। अतः अब गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही एक मात्र विकल्प है जिससे भारत की भावी पीढ़ी को शिक्षित व संस्कारित करके संभाला जा सकता है।

कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रमुख उद्बोधन में कहा कि हम सभी लोग सौभाग्यशाली हैं जो हमें यहां चतुर्वेद पारायण यज्ञ में सम्मिलित होने का अवसर मिला है। स्वामी जी ने कहा कि हमें यज्ञ को विस्तारित रूप से समझने की जरूरत है। गोपथ ब्राह्मण के अनुसार यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है। अतः यज्ञ सबसे श्रेष्ठ कर्म कैसे है यह जानना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने वेद–वेदांग एवं सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का एक शब्द में निष्कर्ष यज्ञ को बताया और कहा कि मानवता के कल्याण के सभी कार्य यज्ञ माने जाते हैं। देवयज्ञ, यज्ञ का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है और जैसे ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ को महर्षि दयानन्द जी ने महायज्ञ कहा है। किन्तु समझने की बात यह है कि देवयज्ञ के अतिरिक्त चारों अन्य महायज्ञों में देवयज्ञ की तरह वेदी नहीं सजाई जाती। अग्नि प्रवज्ज्वलित करके आहुति भी नहीं दी जाती, किन्तु ये भी महायज्ञ कहलाते हैं। अतः यज्ञ शब्द का स्पष्ट अर्थ और उसके सर्वश्रेष्ठ होने का आधार मानवता के उपकार के लिए किये जाने वाले सभी कार्य यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। महर्षि दयानन्द जी के अनुसार यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि ही नहीं अपितु आत्मा की उन्नति एवं तृप्ति होती है। स्वामी जी ने स्पष्ट करते हुए बताया कि जब कभी कोई व्यक्ति मानवता के दृष्टिकोण से किसी पीड़ित व्यक्ति की सहायता करके उसके दुःख दूर करता है तो वह दुःखी व्यक्ति उसकी सहायता करने वाले के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता है और अपनी अन्तरात्मा से उसको दुआएं देता है। इस परोपकारी व्यक्ति के ऐसे व्यवहार से उसकी आत्मा में प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है और इससे उसकी आत्मा की उन्नति होती है। निष्कर्ष यह है कि जिस कार्य से सभी प्राणियों का कल्याण एवं उत्थान होता है तो वह यज्ञ कहलाता है, क्योंकि सब प्राणियों की भलाई के लिए निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ही सर्वश्रेष्ठ कार्य होता है और इसीलिए यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कार्य माना जाता है। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित धर्मप्रेमी जनता का आह्वान किया कि मनुष्य जीवन अमूल्य है हमें अपना आत्मालोचन करना चाहिए। यदि हम आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ तथा अज्ञानवश शुभ कार्यों में अपना समय नहीं लगाते, परोपकार तथा धर्म के कार्यों में रुचि नहीं लेते किसी असहाय की सहायता नहीं करते तो हमारा जीवन व्यर्थ व्यतीत हो रहा है। यह एक गम्भीर चेतावनी है। अतः अपने जीवन को सार्थक करने के लिए ईश्वर की उपासना तथा परोपकार (यज्ञ) अवश्य करना चाहिए। स्वामी जी ने दान के महत्व पर भी संक्षेप में प्रकाश डालते हुए अपील की कि वे उदारता के साथ दिल खोलकर गुरुकुल को दान देकर पुण्य के भागी बनें।

आर्य समाज फतेहाबाद (हरियाणा) में 23 दिसम्बर, 2018 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का भव्य कार्यक्रम हुआ आयोजित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

आर्य समाज फतेहाबाद का मासिक सत्संग 23 दिसम्बर, 2018 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के रूप में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में आस–पास के गांव तथा नगरों से आर्यजन भारी संख्या में सम्मिलित हुए। गुरुकुल वेद मंदिर मताना डिग्गी, फतेहाबाद, आर्य समाज सिरसा, आर्य समाज भट्टो कला, गांव बोदीवाली, ग्राम जांडवाला, डिंगमण्डी, आदमपुर, खाबड़ाकला, मेहुबाला आदि गांव से भी लोग कार्यक्रम में पहुँचे।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का इस अवसर पर ओजस्वी उद्‌बोधन अमर हुआत्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन, उनके कार्य तथा उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए निरन्तर सवा घण्टे तक धारा प्रवाह रूप से चला। श्रोताओं ने मन्त्र मुग्ध तथा एकाग्र होकर व्याख्यान सुना तथा मुक्त कंठ से प्रंशसा करके अपने आनन्द की अनुभूति की। स्वामी जी ने बड़े जोश एवं भावुकतापूर्ण शैली में स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं को प्रस्तुत करके श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। स्वामी जी ने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा देने वाला है जो पथभ्रष्ट होकर जीवन का महत्त्वपूर्ण समय नष्ट कर रहा होता है। जब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्संग का सान्निध्य स्वामी श्रद्धानन्द जी को नहीं मिला तो वे भी रास्ते से भटके हुए राही की तरह जीवन को गलत दिशा में ले जा रहे थे। अनेक कुसंगति उनके जीवन का हिस्सा बन चुकी थीं और नास्तिकता उनके दिलो–दिमाग में गहरी पैठ बना चुकी थी। किन्तु बरेली में महर्षि दयानन्द के व्याख्यान सुनने के बाद उनका कायाकल्प हो गया और वे कल्याण मार्ग के पथिक बनकर इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अपना नाम अंकित करा गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक दिव्यात्मा थे, जिन्हें अनेक बार जीवन में परिवर्तन करते हुए देखा जा सकता है। वे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि जब उनके पिताश्री नानकचन्द बनारस में नौकरी करते थे तब स्वामी श्रद्धानन्द जी भी अपने पिता के साथ बनारस में ही रहते थे। पिता जी की प्रेरणा से वे नियमित बनारस के प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर में दर्शन एवं पूजा के लिए जाने लगे। एक दिन जब वे पूजा के लिए मंदिर पहुंचे तो वहां व्यवस्था में लगाये गये सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया और यह जानते हुए कि वे यहाँ के कोतवाल के बेटे हैं उन्हें सम्मानस्वरूप एक कुर्सी आगे बढ़ाकर कहा कि आप कुछ देर इस पर बैठ जाओ। स्वामी श्रद्धानन्द तत्कालीन मुंशीराम के मन में उन्हें पूजा के लिए जाने से रोकने का कारण जानने की इच्छा उत्पन्न हुई और उन्होंने सुरक्षाकर्मी से पूछा कि वे उन्हें भीतर जाने से क्यों रोक रहे हैं। इस पर सुरक्षाकर्मी ने कहा कि रीवाँ (म. प्र.) की महारानी पूजा के लिए अन्दर गई हुई हैं, जब तक वे पूजा न कर लें तब तक किसी को भी भीतर जाने की इजाजत नहीं है। यह सुनकर युवक मुंशीराम के मन में प्रश्न कौंध गया कि भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने एवं उनकी पूजा करने में जब यह भेदभाव है तो फिर यह कैसा भगवान होगा। जो इस पक्षपात को स्वीकार कर रहा है। वह अपने मन में ऐसी कथित पूजा और कथित दर्शन के प्रति विद्रोह करके वापस लौट गये और उनके दिल में भगवान एवं धर्म के प्रति नफरत पैदा हो गई और वे नास्तिक बन गये। स्वामी जी ने कहा कि हम सभी भलीभांति जानते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन में भी शिवरात्रि की वह घटना जब उन्होंने अपने व्रत के समय शिव जी की पिण्डी के ऊपर उछल–कूद करते एक चूहे को देखा था और वे उस कथित शिव भगवान के प्रति एक प्रश्न एवं विद्रोह मन में लेकर निकल पड़े थे तथा सच्चे शिव की तलाश में निरन्तर 14 वर्ष तक विभिन्न स्थानों का चक्कर लगाते रहे थे। कहने का तात्पर्य यह है कि जो दिव्य आत्माएँ होती हैं उनका विवेक एवं सत्याग्रह अत्यन्त उच्चकोटि का होता है एवं सत्य के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने नास्तिकता की इस स्थिति को महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के प्रभावशाली प्रवचनों एवं उनकी योग शक्ति के प्रभाव से छोड़ दिया और पक्के आस्तिक बनकर अपना सर्वस्व जीवन राष्ट्र एवं मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। आज के युवाओं को उनके विद्रोही, विवेकी, त्यागी, तपस्वी, तेजस्वी, कर्मठ संघर्षशील एवं बलिदानी विचारों तथा जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और देश की वर्तमान विकट परिस्थितियों को बदलने के लिए कृत संकल्प होना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य के प्रभावशाली भजनों एवं उपदेशों से श्रोताओं को स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की अनेक घटनाओं को सुनने का अवसर मिला। श्री रामनिवास जी धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में चल रहे पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं अन्याय के विरुद्ध अपनी ओजस्वी शैली में भजन एवं उपदेश से लोगों को अत्यन्त प्रभावित करते हैं। उनका कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली रहा।

इस अवसर पर पं. कर्मवीर शास्त्री, पं. सत्यदेव शास्त्री पुरोहित आर्य समाज ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंच संचालन एवं सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व समाज के यशस्वी मंत्री डॉ. राजवीर आर्य ने संभाला। उनके अतिरिक्त आर्य समाज के प्रधान एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री बंशीलाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री भूपसिंह पटवारी, उपप्रधान श्री सूरजभान सोनी, उपमंत्री श्रीमती सुमन आनन्द, जिला वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री जयवीर आर्य, आर्य समाज सिरसा के प्रधान श्री भूपसिंह व मंत्री श्री भीष्म शास्त्री, श्री मनदीप आर्य गोरखपुर, श्री राजेन्द्र सिंह आर्य चाडीवाल सिरसा, डॉ. शीशराम आर्य महम, श्री शमशेर सिंह गोदाराखाबड़ा, श्री सुरेश जाखड़, श्री दिलीप सिंह आर्य, श्री बुद्धराम आर्य एवं गुरुकुल वेद मंदिर के प्रधान डॉ. चिरंजीलाल आर्य आदि महानुभाव विशेष रूप से विराजमान थे। मिशन आर्यावर्त न्यूज बुलेटिन के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने व्याख्यान को सीधे प्रसारित करने की विशेष व्यवस्था की। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक एवं प्रभावशाली रहा।

योगाचार्य डॉ. रामवीर के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार यज्ञ सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ता योगाचार्य डॉ. रामवीर के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार यज्ञ गत् 22 दिसम्बर, 2018 को उनके निवास स्थान ग्राम–सिवाना, जिला–झज्जर, हरियाणा में आयोजित हुआ जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी, कोषाध्यक्ष श्री अजयपाल आर्य जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम आर्या जी एवं बहन प्रवेश आर्या जी, डॉ. सत्यपाल फौगाट आदि भी यज्ञ में सम्मिलित हुए।

नवजात शिशु का नामकरण 'आर्यन' के रूप में किया गया। नामकरण की प्रक्रिया को स्वामी आर्यवेश जी ने पूरा किया। यज्ञ के उपरान्त सभी विद्वानों ने डॉ. रामवीर तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिल्पा आर्या को अपनी शुभकामनाएं तथा बधाई दी। सभा में उपस्थित महानुभावों ने नवजात शिशु आर्यन को आशीर्वाद देकर उसके दीर्घायुष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर डॉ. रामवीर आर्य के समस्त मित्रगण, सम्बन्धीगण एवं शुभचिन्तक उपस्थित थे, साथ ही श्रीमती शिल्पा आर्या के माता–पिता एवं उनकी बहन भी यज्ञ में पधारे हुए थे। यज्ञ के उपरान्त प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित सभी स्त्री–पुरुषों को प्रेरणा दी कि वे भी अपने परिवारों में संस्कार करवाने की व्यवस्था किया करें। बच्चे के पैदा होने से लेकर उसके जीवन क्षेत्र में उतरने तक कई महत्त्वपूर्ण संस्कारों का विधान महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया है। उनका तात्पर्य यही है कि बच्चे को समय पर अच्छे संस्कार मिल जायें तो वे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी जी ने परिवारों में विशेष पर्वो एवं जन्मदिन एवं पुण्यतिथि आदि के अवसरों पर यज्ञ एवं सत्संग की परम्परा को आगे बढ़ाने पर भी बल दिया।

आर्य समाज नरवाना, जिला–जीन्द में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर

श्रद्धानन्द धर्मार्थ औषधालय में कार्यरत लैब में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा किया गया अत्याधुनिक मशीन का लोकार्पण

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को दी गईं भावपूर्ण श्रद्धांजलियाँ

आर्य समाज नरवाना, जिला–जीन्द, हरियाणा एक सक्रिय एवं सामाजिक सेवा के कार्यों में समर्पित आर्य समाज है। कोई ऐसा पर्व अथवा किसी महापुरुष के जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तिथि ऐसी नहीं होती जब आर्य समाज नरवाना तथा उसके अन्तर्गत संचालित आर्य स्कूल एवं उसकी सभी शाखाएँ कोई न कोई कार्यक्रम आयोजित न करती हों।

23 दिसम्बर, 2018 को आर्य समाज नरवाना के तत्वावधान में आर्य सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल तथा उसकी अन्य सभी शाखाओं के सहयोग से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का भव्य बलिदान समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या, मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर आर्य समाज में संचालित श्रद्धानन्द धर्मार्थ औषधलाय में चल रही जांच लैब के लिए लाई गई विशेष जांच मशीन का लोकार्पण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा किया गया। इस जांच मशीन की क्षमता 60 टेस्ट एक साथ करने की है, पूरे जिले में इतनी क्षमता की मशीन न होने के कारण इस औषधालय में हजारों लोग अल्प व्यय से अपनी जांच कराने आते हैं और इस सुविधा का लाभ उठाते हैं। इस परोपकारी कार्य के कारण पूरे क्षेत्र में आर्य समाज की ख्याति बड़ी तेजी से फैल रही है।

आर्य समाज के प्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य ने स्वामी जी को बताया कि श्रद्धानन्द धर्मार्थ औषधालय में चल रही लैब के परिणाम सबसे अधिक विश्वसनीय माने जाते हैं। जिस जांच के लिए रोगियों को रोहतक तथा दिल्ली जाना होता था वह अब उन्हें नरवाना में ही प्राप्त हो रही है। विशेष बात यह है कि ऐसी महत्त्वपूर्ण जांच के लिए लोगों से अत्यन्त सामान्य खर्च वसूल किया जाता है। मशीन लोकार्पण के उपरान्त बलिदान समारोह में वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये और अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला।

अपने उद्‌बोधन में बहन पूनम आर्या ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के त्याग, समर्पण एवं बलिदान को युवाओं के लिए विशेष प्रेरणादायक बताया। बहन प्रवेश आर्या ने स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा नास्तिक से आस्तिक बनकर जो आध्यात्मिक उन्नति की उसका अनुकरण करने के लिए युवाओं से अपील की।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सम्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी एवं पुनर्जीवित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को एक ऐतिहासिक कार्य बताते हुए कहा कि महाभारत के पश्चात् 19वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया और अंग्रेजी शिक्षा नीति को चुनौती दी। स्वामी जी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को चालू करके स्वामी श्रद्धानन्द जी ने क्रांतिकारी कदम उठाया था। इस समारोह के मंच का संचालन आर्य समाज के मंत्री श्री विजय कुमार आर्य ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया। आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री नरेश कुमार जी ने स्वामी जी तथा अन्य विद्वानों एवं आगन्तुक महानुभावों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में सर्वश्री इन्द्रजीत आर्य प्रधान श्री अश्विनी आर्य, श्री रमेश आर्य, श्री आदित्य आर्य, श्री विवेक, श्री सुभाष व आर्य सीनियर

सेकेण्ड्री स्कूल के प्रधानाचार्य श्री विनोद कौशिक, आर्य समाज के पुरोहित श्री मिथिलेश शास्त्री आदि ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से तथा व्यवस्था में योगदान से अपनी विशेष भूमिका निभाई। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ देकर अपनी प्रतिभाओं का परिचय दिया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को स्वामी आर्यवेश जी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

आर्य समाज शकरपुर में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज शकरपुर तथा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के संयुक्त तत्वाधान में आर्य समाज शकरपुर में 23 दिसम्बर, 2018 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री दीपक गुप्ता अध्यक्ष दिल्ली प्रान्त विश्व हिन्दू परिषद् धर्म प्रसार, रिटायर्ड प्रोफेसर श्री रमेश गोयल दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री चतर सिंह नागर महामंत्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, श्री सुरेन्द्र रैली, श्री यशपाल शास्त्री प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य समाज शकरपुर के कार्यकारी प्रधान श्री ओम प्रकाश रूहिल आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन की विस्तार से चर्चा की। वक्ताओं ने वर्तमान परिस्थितियों में शुद्धि के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने पर बल दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रवि बहल ने की तथा सभा का कुशल संचालन आर्य समाज के यशस्वी मंत्री श्री पतराम त्यागी ने किया।

इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी, श्री विनोद सिंघल, श्री आर. के. शर्मा प्रधान आर.डब्ल्यू.ए. ब्लाक, सरदार दलजीत सिंह प्रधान आर. डब्ल्यू.ए. ब्लाक गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री नन्द कुमार वर्मा, श्री प्यारे कृष्ण गडरू, श्री राधेश्याम गुप्ता, श्री नरेश गुप्ता, श्री मनीष जैन, भावना चोपड़ा, श्री दिनेश सिंह, श्री लखमी त्यागी, श्री अशोक शर्मा, श्री अनिल त्यागी सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे। उपस्थित श्रोताओं ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के उपरान्त जलपान की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

– पतराम त्यागी,
मंत्री आर्य समाज शकरपुर

कमर दर्द – जीवन शैली में सुधार से उपचार

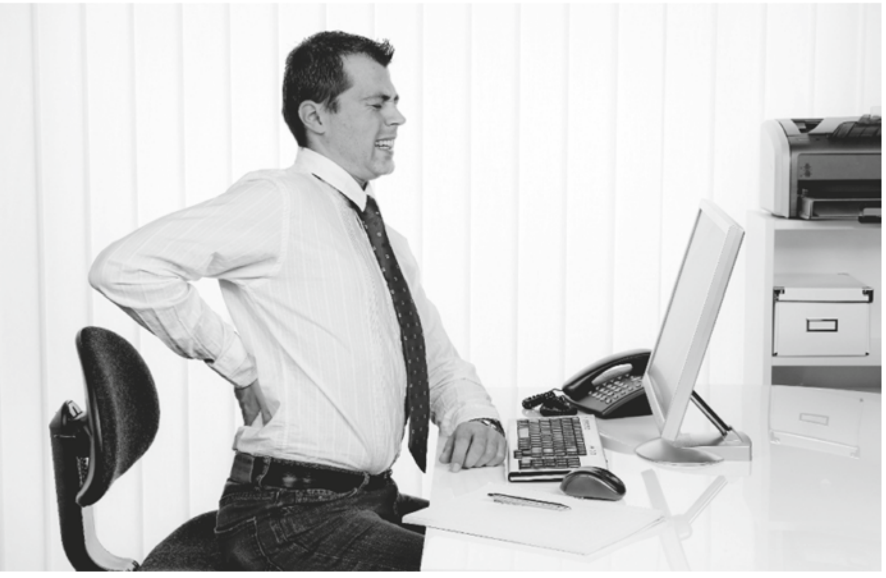

आधुनिक जीवन शैली के बदलाव ने लोगों को कमर दर्द का मरीज बना दिया है। दिनभर घर, ऑफिस में बैठकर काम करना, टीवी देखना, गद्देदार कुर्सियों का अधिक उपयोग, धूप नहीं सेंकना जैसे कारणों से लोग कमर दर्द से पीड़ित हो रहे हैं। वर्तमान में 80 प्रतिशत लोग कमर दर्द से पीड़ित हैं। काम करने के घंटे बढ़ जाने के साथ-साथ भागदौड़ भी बढ़ गई है। जैसा परिश्रम और शारीरिक श्रम किया जाना चाहिए, वैसा नहीं हो रहा है। वाहन के उपयोग के समय सीट पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता जिससे सर्दी, खांसी जैसी आम बीमारी की तरह लोग कमर दर्द से पीड़ित हो रहे हैं।

लोग अपने-अपने बैठने के तरीकों से लेकर सोने तक की मुद्रा पर ध्यान नहीं देते और लापरवाही बरतते हैं। इन गलत आदतों के कारण कमर व हड्डियों में दर्द शुरू होता है। सबको जीवन में कभी न कभी दर्द से दो चार होना पड़ता है। स्त्री-पुरुष, बच्चे-बड़े सब एक न एक दिन इसकी चपेट में आते हैं। कुछ सचेत होकर जल्द उबर जाते हैं तो कुछ दीर्घ अवधि तक इसे भुगतते हैं। लापरवाही एवं नीम हकीम मिलकर विकलांग जैसी स्थिति में पहुंचा देते हैं।

आधुनिक एवं आजकल के व्यस्त जीवन में कमर दर्द आम हो गया है। दस में से सात से नौ व्यक्ति कभी न कभी अपने जीवन काल में इस कमर दर्द से जूझते हैं। जुकाम, बुखार, सांस आदि से पीड़ित व्यक्ति कमर दर्द की शिकायत करते हैं। ठण्ड व बरसात में इसकी पीड़ा ज्यादा होती है एवं ज्यादा लोग इससे पीड़ित होते हैं।

अनदेखी, लापरवाही, नए संसाधन, फैशन, श्रम में कमी, ऊँची एड़ी के जूते, चप्पल, सैंडल एवं लम्बी बैठक इस कमर दर्द के जनक व वर्धक है। सबका निदान है, अनेक उपाय है। दर्द नाशक तीव्र दवा, इंजेक्शन से लेकर मशीनी इलाज एवं बिना खर्च वाले उपाय भी हैं। दवाएं दुष्प्रभाव करने वाली होती हैं। अस्थाई राहत देती है जबकि जीवन शैली में श्रम, व्यायाम वाला सुधार स्थाई इलाज करता है।

दुर्घटनाओं से कमर दर्द की परेशानी कुछ लोगों को होने लगती है। यह हड्डियों में चोट के चलते होता है। डॉक्टर की सलाह पर व्यायाम से इसका इलाज हो सकता है।

महिलाओं में कमर दर्द की परेशानियां सर्वाधिक होती है। महिलाएं अपने मासिक चक्र, लगातार एक जैसी स्थिति में रहने बैठकर किए जाने वाले घरेलू काम, डायटिंग या वजन वृद्धि एवं ऊँची एड़ी के जूतियों के उपयोग के कारण कमर दर्द से जूझती हैं। इनको हर आयु में कमर दर्द होता है। अन्य के सापेक्ष में इनका कमर दर्द तीव्र व दीर्घ अवधि का होता है पर ये इसे बिना प्रकट किए सहती रहती है। घरेलू महिलाओं की तरह ही उतनी की कामकाजी महिलाएं भी इससे पीड़ित होती है। जिन महिलाओं को सतत कमर दर्द होता है, इन्हें समय-समय पर चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए।

बच्चे भी कमर दर्द की शिकायत करते हैं। इनको कमर दर्द का कारण बड़ों से अलग होते हैं। ये शारीरिक कमजोरी के कारण कमर दर्द से जूझते हैं। बस्ते का बोझ भी कमर दर्द होता है। स्कूल के बाद ट्यूशन क्लास में लम्बी बैठक एवं खेल में कमी के कारण इन्हें कमर दर्द होता है।

कमर दर्द पीड़ित छोटे बच्चों की डाक्टर से जांच कराएं। बस्ते का भार कम हो। वह चौड़ी पट्टी एवं एडजस्टेबल हो। उसका भार कंधे या पीठ पर केन्द्रित न होकर बंट जाने वाला हो। साइकिल की सीट व हैंडल उसके अनुरूप हो। उसे दैनिक खेलने का भी अवसर दें। पर्याप्त पोषक आहार दे। फास्ट फूड को बढ़ावा न दें।

बड़े लोग श्रम शून्य लम्बी बैठक, झुककर काम करने के कारण, साइकिल या बाइक के कारण, श्रम व्यायाम की कमी एवं सुविधाभोगी आराम पसंद जिंदगी के कारण इससे पीड़ित होते हैं। यदि वे इस जड़वत स्थिति को त्याग कर थोड़ा भी हाथ पैर चलाएंगे अर्थात श्रम व्यायाम करेंगे तो कमर दर्द से जल्द राहत पा जायेंगे।

कमर दर्द से बचाव

नियमित रूप से पैदल चलें। यह सर्वोत्तम व्यायाम है। अधिक समय तक कुर्सी या स्टूल पर झुककर न बैठें। शारीरिक श्रम से पीछे न हटें। जी न चुराएं। इससे मांसपेशियां मजबूत होती हैं। ऊँची एड़ी के जूते, चप्पल, सैंडिल के बजाये साधारण तले वाली पहनें। सोने वाला बिस्तर सीधा सपाट होना चाहिए तथा उस पर रूई का साधारण बिस्तर होना चाहिए। कार चलाते समय ड्राईविंग सीट थोड़ी आगे होनी चाहिए। दाएं, बाएं या पीछे देखने के लिए पूरा घूमें। पेट के बल न सोकर चित्त सोएं। कमर झुकाकर नहीं, सीना तानकर चलिए। अधिक वजन न उठाएं। गलत तरीके से न बैठें। बैठते समय रीढ़ की हड्डी सीधी हो। ज्यादा नरम गद्दा न हों। लेटकर टीवी नहीं देखना चाहिए। लेटकर कापी किताब नहीं पढ़नी चाहिए। सीधे तरीके से खड़े हों। एक पैर पर शरीर का भार न डालें। शारीरिक श्रम, व्यायाम या योगाभ्यास करें।

- संकलनकर्ता - घनश्याम मुरारी

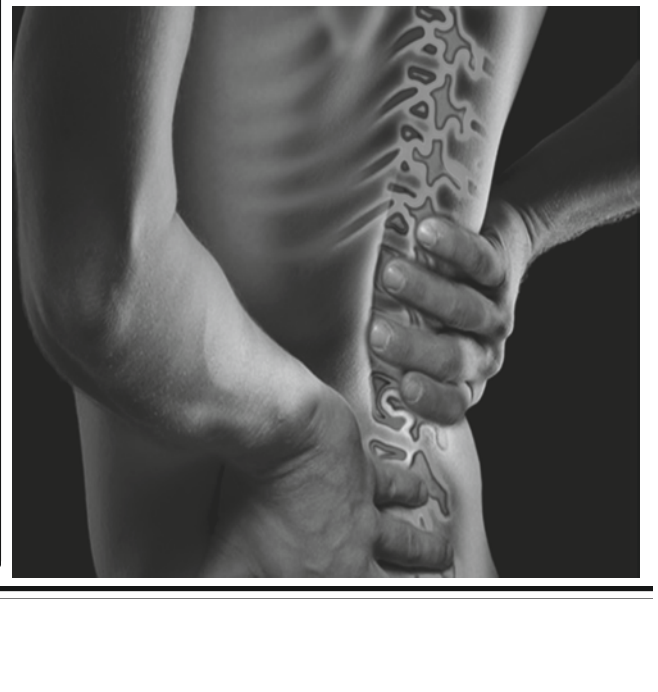

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक 10 मार्च, 2019 (रविवार)

स्थान : रोहतक, (हरियाणा)

विशेष आकर्षण

- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
- स्मारिका का विमोचन
- कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान
- आगामी 50 वर्षों के कार्यों की घोषणां
- 50 वर्ष के इतिहास पर डोक्यूमेंट्री फिल्मं
- व्यायामाचार्यों एवं योग शिक्षकों का सम्मान
- 50 जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार करने का लक्ष्यं
- परिषद् के संस्थापकों एवं सहयोगियों का सम्मान
- पिछले 50 वर्षों की ऐतिहासिक गतिविधियों की प्रदर्शनीं
- 'राजधर्म' मासिक पत्रिका के पिछले 50 वर्षों में प्रकाशित महत्वपूर्ण अंकों की प्रदर्शनीं
- स्वामी इन्द्रवेश जयन्ती समारोह एवं चतुर्वेद महायज्ञ पूर्णाहुति कार्यक्रम 9 मार्च, 2019 को

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा

9416630916, 9354840454, 9468165946

सुधारों का सर्वव्यापी स्वागत हो

– अशोक आर्य

प्रत्येक समाज के जीवन में मान्यताओं, परम्पराओं और आचरण के क्रम में समानता, नैतिकता का स्तर सदैव एकसा नहीं रहता, समय के साथ इनमे परिवर्तन होते रहते हैं। जीवन्त समाज वही होता है जो कभी न कभी ऐसी सभी मान्यताओं, प्रक्रियाओं पर जो कि समाज में असमानता, विभेद, वैषम्य की जनक होती हैं उन्हें विनष्ट कर देता है अथवा न्यून करने का प्रयत्न करता रहता है। जो समाज ऐसा करने में सफल रहता है वही गतिशील रह पाता है। समाज के नेताओं, कर्णधारों, प्रमुखों का यह कर्तव्य है कि वे इस दिशा में सचेत रह अपने कर्तव्य का पालन करें। सदा यह देखने में आया है कि जब परम्पराएँ स्थापित हो जातीं हैं तो जन मानस उनके गुणावगुण अथवा औचित्य पर विचार किये बिना उन्हें यथावत् स्वीकार कर लेता है और यहाँ तक कि अनेक अमानवीय प्रथाएँ पवित्रता के आवरण में सुस्थिर हो जाती हैं। इतिहास गवाह है कि जब कोई महापुरुष इनका विरोध करता है तो अपने ही समाज के लोग उसकी बात पर ध्यान देना तो दूर उसका प्रबल विरोध प्रारम्भ कर देते हैं। पर बुराइयों, विपरीतताओं, वैषम्य, अन्याय, शोषण को परंपरा मानने का सतत् विरोध होता रहे तो इनका अन्त होता ही है। भारतीय संस्कृति की बात करें तो उसमें मानवता के उदात्ततम गुण समाविष्ट मिलते हैं, परन्तु अनेक कारणों से हमारे यहाँ भी सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हुआ। समय–समय पर उच्च विचार वाले महापुरुषों ने इन रुढ़ियों, कुरीतियों को समूल नष्ट करने का प्रयास किया। इन्हें भी प्रारम्भ में विरोध का सामना करना पड़ा पर अन्ततोगत्वा समाज की पटरी सीधे मार्ग पर चलने लगी। भारत ही नहीं दुनिया के हर देश में ऐसा होता है, हुआ है और होता रहेगा।

भारत में मुस्लिम आक्रान्ताओं तथा बाद में अंग्रेजों की लम्बी गुलामी के काल में हमारा सांस्कृतिक पराभव हुआ। जिस देश में हिंसा को परम धर्म माना जाता था वहाँ धर्म के नाम पर ही हिंसा का ऐसा ताण्डव हुआ कि मानवता शर्मसार हो जाय। जिस यज्ञ को अध्वर अर्थात् हिंसा से रहित माना जाता था वहीं 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' कहकर यज्ञ में बलि दी जाने लगी। कालांतर में मंदिरों में पशुबलि दी जाने लगी। क्षत्रिय वर्ग दशहरा आदि के अवसर पर भैंसों की बलि देना क्षात्रधर्म का प्रतीक मानने लगा। वेदों में जिन पशुओं के प्रति भी मित्र भाव को रखने के निर्देश दिए गए थे उन्हीं मूक निरीह प्राणियों की धर्म के नाम पर हत्या की जाने लगी।

गत शताब्दी में देखें तो आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने समग्र क्रान्ति का बिगुल बजाते हुए पशु हत्या का भी निषेध किया। धर्म के नाम पर निरीह प्राणियों की हत्या से महर्षि दयानन्द अत्यन्त व्यथित थे तभी उन्होंने उदयपुर प्रवास में अपने प्रति अतुल्य भक्तिभाव रखने वाले उदयपुर नरेश की कचहरी में उपस्थित हो, अपने को निरीह पशुओं का वकील बताते हुए पुरजोर अपील की कि वे दशहरे पर दी जाने वाली पशुबलि–प्रथा को बंद करें। नरेश ने स्वामी जी को आश्वसन दिया कि वे जनमानस में गहराई से बैठी इस कुप्रथा को धीरे–धीरे पूर्णरूप से बंद कर देंगे। ऐसी कुप्रथाएँ लगभग सभी मतमतान्तरों में विद्यमान हैं। पर अनेक मतस्थजन सुधार–प्रक्रिया का स्वागत न कर यथास्थिति को धर्म के नाम पर बनाए रखना चाहते हैं। उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि आखिर समाज में व्याप्त कुरीतियों का अंत समाज के द्वारा किया जाता है और अगर आवश्यक हो तो इन कुरीतियों के खिलाफ कानून बनाने की समाज के अन्दर से ही माँग होनी चाहिए और सरकार के किसी भी ऐसे प्रयत्न का समर्थन होना चाहिए तभी समाज अनैतिक कुप्रथाओं के बंधन से मुक्त हो सकेगा। पशु, विशेष रूप से लाभकारी पशुओं जैसे दूध देने वाले गाय आदि पशुओं की हत्या रोकने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने हस्ताक्षर अभियान चलाया जिसका उद्देश्य महारानी विक्टोरिया को गौवंश वध के खिलाफ कानून बनाने के लिए प्रेरित करना था। आर्य समाज ने मंदिरों में धर्म के नाम पर चल रही पशुबलि प्रथा को रोकने में अथक परिश्रम तथा उद्योग किया है। सवाई माधोपुर के पास एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है 'कैला देवी'। हमें अभी भी स्मरण है, जब हम 11–12 वर्ष के होंगे तब वहाँ के प्रसिद्ध कैला देवी मंदिर में एक विशेष मेले के अवसर पर पशु बलि दी जाती थी। उस समय आर्य समाज उन्हीं दिनों में वहाँ पशु–बलि निषेध की प्रेरणा देने हेतु कैम्प लगाता था। पूज्य पिताजी आचार्य प्रेमभिक्षु जी प्रमुखों में होते थे तथा पूरे परिवार के साथ वहाँ होते थे। मंदिर का पूरा प्रांगण रक्त से सराबोर हो अत्यन्त बीभत्स दीखता था। आर्य समाज के स्वयंसेवकों का प्रारम्भ में तीव्र विरोध होता था पर धीरे–धीरे जागृति आती गयी।

बुंखाल थैलीसण गढ़वाल के मेले में पशु बलि दी जाती रही। उत्तराखंड में होने वाला यह पशु बलि मेला प्रतिवर्ष नवंबर के अंत या दिसंबर के आरंभ में होता है। यहाँ आने वाले लोग मानते हैं कि कालिंका देवी के पास यदि भैंसा या बकरा चढ़ाने की मनौती माँगी जाए तो वह पूरी होती है और संतान प्राप्ति, बीमारी, चुनाव में जीत जैसी अनेक मनौतियाँ पूरी होती हैं। मेले के दिन पहाड़ी पर बने बुंखाल कालिंका के मंदिर में हजारों लोगों की भीड़ जुटती है और बलि दिए जाने वाले भैंसे को पहले दौड़ाया जाता है, जब वह थक जाता है, तब उसकी बलि दी जाती है। इसके बाद उसके शव को पहाड़ी से नीचे फेंक दिया जाता है। 1980 के दशक में स्वामी मनमंथन पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने इस दिशा में काम किया और चंद्रबदनी मंदिर में बलि प्रथा समाप्त हुयी। आर्य समाजी गबर सिंह राणा पिछले चार दशकों से पशु बलि समाप्त कराने के लिए जनजागरण में लगे हैं। उनका भी खूब विरोध हुआ, कई बार बलि समर्थकों ने उनका तम्बू ही उखाड़ फैंका पर वे डटे रहे, उनकी मेहनत रंग लाई और कालीमठ में बलि बंद हो गई, और इसका कई अन्य जगहों पर भी अनुसरण हुआ। आज भी यह बलि प्रथा पूर्णतः बंद नहीं हुयी है परन्तु कानून तथा जन जागृति के प्रयासों से पशु–क्रूरता समाप्त हो जायेगी ऐसी आशा है।

जो कल्याणकारी धर्म अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा और दयामूलक सिद्धान्तों पर टिका है, उसके नाम पर अथवा उसकी आड़ लेकर पशुओं का वध करना धर्म के उज्ज्वल स्वरूप पर कालिख पोतने के समान ही है। ऐसा करने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

परन्तु इस बात को हिन्दू धर्म के अनुयायियों में से अधिकांश ने स्वीकार कर इन बर्बर प्रथाओं का समर्थन करना बंद कर दिया है और इस सम्बन्ध में बने कानून, न्यायालय के आदेशों तथा समाज सुधारकों के प्रयासों का अब विरोध नगण्य जैसा है। हम सोचते हैं कि धर्म के नाम पर चल रहे इस जघन्य अपराध को बंद करने के सभी तरीकों को जब हिन्दू समाज मान चुका है और अपने को अब दूर करता जा रहा है तब अन्य मतावलम्बियों को उनके समाज में व्याप्त पशुवध को रोकने में अधर्म के दर्शन क्यों होने चाहिए और ऐसे किसी कानून जैसे 'पशु क्रूरता निवारण अधिनियम' को स्वीकार क्यों नहीं करना चाहिए। इसके लिए पहल क्यों नहीं करनी चाहिए।

यह बात नहीं है कि हिन्दू समाज में कुरीतियाँ व्याप्त नहीं हैं। नारी के समाज में स्थान निर्धारण को लेकर तथा जन्म के आधार पर एक बड़े वर्ग के आत्मसम्मान को लेकर अमानवीय व्यवहार हमारे यहाँ प्रचलित रहा और बाबजूद सामजिक जागृति तथा कानूनों के आज भी न्यून मात्रा में ही सही मौजूद है पर यह है कि इस सम्बन्ध में कार्यशील महापुरुषों का विरोध तो प्रबल हुआ पर उनके कार्य को कुफ्र मान सार्वजनिक फतवे जारी नहीं किये गए। इतना भी समाज सुधार के लिए पर्याप्त था। सती प्रथा ने धर्म का रूप ले लिया था। राजा राम मोहन राय ने इसका प्रबल विरोध किया। अभी भी रूपकंवर के मामले में इस बर्बर प्रथा ने पुनः सर उठाया तो आर्य समाज ने सती प्रथा के विरोध में प्रबल आन्दोलन चलाया। आम हिन्दू इसकी अमानवीयता को हृदय से स्वीकार करते थे अतः सती प्रथा व इसके महिमामंडन को रोकने के लिए बनाए गए कानून को स्वीकार कर लिया गया, इसे हिन्दुओं द्वारा अपने धर्म के ऊपर आक्रमण के रूप में नहीं देखा गया। एक सच्चे नागरिक की यही मानसिकता होनी चाहिए कि समाज में जो भी अभद्र है, अकल्याणकारी है, वैषम्य का सृजन करने वाला है उसको समाप्त करने हेतु यदि कोई प्रयास होता है चाहे वह कानून के रूप में हो उसे समर्थन दे। उसे अपने समुदाय के लिए खतरा नहीं बल्कि श्रेयस्कर समझे। आज अल्पसंख्यक कहे जाने वाले वर्गों को स्वकल्याण के लिए यह समझना होगा कि नारियों की स्थिति को बराबरी देने के लिए, उनकी बेहतरी के लिए पर्सनल कानूनों में अगर सुधार प्रस्तावित है तो उसका स्वागत करना चाहिए न कि विरोध।

सभी जानते हैं कि बाल विवाह नारी जाति के लिए अभिशाप है। इसे हिन्दू धर्म में एक प्रकार से धर्म का रूप दे दिया गया था। परन्तु जैसा हमने लिखा बुराइयों पर प्रहार भी समुदाय के भीतर से होना चाहिए, महर्षि दयानन्द ने इसका प्रबल विरोध किया। आप उनके द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ देखें– वे बालविवाह को देश में बिगाड़ का मूल मानते हैं। पूर्ण युवावस्था प्राप्त होने पर गुण कर्म स्वभाव के मेल के आधार पर स्वयंवर विवाह को वे देश में सब सुधारों की नींव मानते हैं। उनके पश्चात् आर्यसमाज ने बालविवाह रोकने के लिए जन जागृति के अभियान तो छेड़े ही साथ में कानून निर्माण की माँग की। यद्यपि हिन्दू विवाह अधिनियम एक पर्सनल लॉ है परन्तु सुधार की भावना से स्वयं समुदाय द्वारा कानून बनाकर बाल–विवाह को प्रतिबंधित कराने का प्रयास किया गया। आर्य समाज के नेता दीवान हरविलास शारदा ने यह बिल रखा जिसे 1929 में कानून बनाया गया। यह भी हिन्दुओं का पर्सनल लॉ था जिसमें स्वयं समाज के प्रबुद्धों द्वारा सुधार करवाया गया, यद्यपि उस समय इसका विरोध भी हुआ परन्तु बहुसंख्य समाज ने इसकी कल्याणकारी प्रवृत्ति को देखते हुए इसे स्वीकार किया। आज हिन्दू नारी को स्वामी दयानन्द और उनके शिष्य शारदा जी का कृतज्ञ होना चाहिए।

एक समय था जब हिन्दू विवाह अधिनियम में अंतर्जातीय तथा अंतर्धार्मिक विवाह स्वीकार्य नहीं थे। आर्य समाज ने इस को समाप्त करने हेतु प्रबल प्रयास किये। मध्यावधि में 'आर्यन स्पेशल मेरिज एक्ट' बना जिसमें आर्यों के मध्य होने वाले विवाहों में अंतर्जातीय तथा अंतर्धार्मिक विवाह स्वीकार्य किये गए। आज तो हिन्दू विवाह अधिनियम के अंतर्गत भी ये स्वीकृत हैं।

अस्पृश्यता हिन्दू समाज पर एक कलंक के रूप में जाना जाता है। किसी के जन्म के आधार पर किसी को तिरस्कृत करना, उसका अपमान करना, हेय समझना अमानवीय है इसमें कोई संदेह नहीं। आर्यों के इतिहास में कभी भी ऐसी व्यवस्था को समर्थन नहीं दिया गया, परन्तु बीच के कालखण्ड में यह अभिशप्त परंपरा स्थापित हो गयी जिसने सारे सामजिक ढाँचे व आपसी समरसता को हिला कर रख दिया। स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इसका प्रबल विरोध किया और जिन लोगों ने जन्माधारित जाति व्यवस्था को वेद प्रणीत बताया उन्हें स्वामी जी ने चैलेंज दिया। वे लोग कभी भी वेद में इसका समर्थन नहीं दिखा सके। अतः ऋषि दयानन्द ने घोषणा की कि जन्माधारित जाति व्यवस्था न वेद समर्थित है, न इतिहास समर्थित और न ही प्राकृतिक न्याय की कसौटी पर खरी उतरती है और न ही कल्याणकारी है अतः इसका अंत होना चाहिए। आर्य समाज ने दलित वर्ग को नाम देने के साथ ही उनकी सामाजिक मान्यता व अन्य वर्ग के साथ बराबरी को मान्यता देने के लिए इनके लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए। गुरुकुलों में उनको हर प्रकार से बराबरी का दर्जा मिला सबसे बड़ी बात कि उनके उपनाम के रूप में जातिसूचक शब्द लगाने की परंपरा को समाप्त कर उनके नाम के आगे शास्त्री, विद्यालंकार, वेदालंकार जैसे उपाधिसूचक उपनाम जोड़ने की परंपरा डाल दी। अब समाज में वे केवल विद्वान् पंडित हैं, दलित नहीं जो कि स्वाभाविक है, कल्याणकारी है। काश भारत में इस सिस्टम को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया जाता तो दलित समस्या जैसी कोई समस्या ही नहीं होती। राजनेताओं ने तो जो कुछ किया उससे तो दलित दलित ही रह गया। उसे सदैव दलित बनाकर रखने में ही राज नेताओं का भला है। आज उसकी सम्पदा का वर्द्धन भले ही हो गया हो पर वह मुख्यधारा में नही रह सका। आर्यसमाज ने सामाजिक स्तर प्रदान करने के लिए यही प्रयोग नारी जाति के साथ किया। जिस नारी को वेदमंत्र सुनाने पर सजा का प्रावधान था आर्य समाज ने उन्हें ही यज्ञ की ब्रह्मा बना दिया। कन्या गुरुकुलों से अब दलित नहीं विदुषी आचार्यायें निकलती हैं। इस पर भी जब अस्पृश्यता को दंडनीय अपराध बनाने हेतु जब अस्पृश्यता निवारण अधिनियम बनाया गया तो हिन्दुओं द्वारा इसका विरोध नहीं किया गया।

प्रश्न यह है कि जब समाज के लिए कल्याणकारी प्रावधानों को लागू करने के लिए कानून बानाया जाता है तो हिन्दू समाज में समुदाय के कल्याण की भावना से इसका विरोध या तो नहीं होता अथवा अत्यन्त नगण्य होता है, परन्तु अल्पसंख्यक समाज के समक्ष जब भी ऐसा मुद्दा आता है तो उनके धर्मगुरु इतना बबाल मचाते है कि उस पर विचार तक होने की स्थिति नहीं आती। यही बात देश में एक 'सामान आचार संहिता' की जब भी बात की जाती है, उत्पन्न हो जाती है। जब देश एक है, संविधान एक है, हम सब बराबरी भाईचारे, अभेद के लिए कटिबद्ध हैं, सबको सामान स्थान, अधिकार मिले इस को लेकर सहमत हैं तो फिर चिंता किस बात की है? समान आचार संहिता देश के प्रत्येक नागरिक की, बिना जाति, मजहब, कुल, लिंग को ध्यान में रखे, उन्नति हेतु प्रावधान करने का प्रयास है तो इसमे असह्य क्या है। राष्ट्र हित के प्रावधान सभी मजहब वालों के लिए स्तुत्य होने चाहिए। समान आचार संहिता से जब हिन्दू धर्म को कोई खतरा नहीं है तो अल्पसंख्यकों के धर्म को खतरा क्योंकर हो सकता है? किसी मजहब में ईश्वर के मान्य स्वरूप, उसकी उपासना पद्धति में समान अचार संहिता कोई दखलंदाजी नहीं कर रही। आप कम से कम विचार तो कीजिए।

जब आप एक दंड संहिता पर सहमत हैं, अपने मजहब की दंड संहिता लागू करना नहीं चाहते तो फिर एक आचार संहिता पर सहमत क्यों नहीं? यह दोहरे मानदंड क्यों? इसलिए हिन्दुओं की भाँति स्वकल्याण के लिए अल्पसंख्यकों को भी समान आचार संहिता पर विचार अवश्य करना चाहिए।

– नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

आर्य समाज की महान विभूति स्व. आचार्य विश्वमित्र जी की 8वीं पुण्य तिथि दिनांक 26 दिसम्बर, 2018 के अवसर पर

दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार में विशेष यज्ञ एवं कार्यक्रम हुआ आयोजित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अर्पित की श्रद्धांजलि

आर्य समाज की महान विभूति स्वनामधन्य आचार्य विश्वमित्र शास्त्री जी की 8वीं पुण्य तिथि के अवसर पर 26 दिसम्बर, 2018 को उनकी स्मृति में दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार में एक विशेष यज्ञ एवं स्मृति सभा का आयोजन किया गया। आचार्य विश्वमित्र शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती शशि आर्या के द्वारा आहूत की गई स्मृति सभा में अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लेकर श्री विश्वमित्र शास्त्री जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, यशस्वी आर्य नेता एवं आर्य समाज हिसार के प्रधान चौ. हरिसिंह सैनी, स्वामी माधवानन्द जी महाराज, गुरुकुल आर्य नगर के कुलपति आचार्य रामस्वरूप शास्त्री, वेद प्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री राम कुमार आर्य, आर्य युवक परिषद् हिसार के प्रधान श्री दलबीर सिंह आर्य मुकलान, गुरुकुल धीरणवास के प्रधानाचार्य श्री राजमल ढाका एवं श्री नाथू सिंह आर्य, आचार्य सत्यकाम, श्रीमती रेखा सैनी, धर्माचार्य श्री सूर्यदेव आर्य, पं. कर्मवीर शास्त्री, आर्य समाज हिसार के पुरोहित श्री बृजेश शास्त्री आदि महानुभावों के नाम उल्लेखनीय है। यज्ञ एवं स्मृति सभा का कुशल संचालन दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के प्रधानाचार्य युवा विद्वान् डॉ. प्रमोद जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् कर्मयोगी आचार्य विश्वमित्र शास्त्री जी एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। 7 मई, 1954 को महाराष्ट्र के उस्मानावाद जिले के औराद गांव में जन्मे आचार्य विश्वमित्र जी ने अपने जीवन का अधिकतम समय हरियाणा के हिसार नगर में बिताया और वह यहाँ के स्थाई नागरिक हो गये थे। ब्रह्म महाविद्यालय के प्राचार्य आर्य समाज हिसार के धर्माचार्य एवं विविध दायित्व अपने ऊपर लेकर उन्होंने अपनी योग्यता का बड़ी कुशलता के साथ परिचय दिया। आचार्य विश्वमित्र जी से मेरा सम्पर्क 2008 में हुआ जब उन्होंने आग्रह पूर्वक आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार में श्रावणी पर्व के अवसर पर मुझे वेद कथा के लिए आमंत्रित किया। मेरे लिए मेरे जीवन का यह पहला अनुभव था। उनके द्वारा दिये गये इस अवसर के बाद मुझे वैदिक सिद्धान्तों पर प्रवचन करने का एक व्यापक क्षेत्र उपलब्ध हुआ जिसका पूरा श्रेय आचार्य विश्वमित्र जी को जाता है। आचार्य जी बड़े सौभाग्यशाली थे जिन्हें बहन शशि आर्या जैसी योग्य सहृदय विदुषी जीवन संगिनी मिली। इन दोनों का अटूट आत्मीय सम्बन्ध परस्पर सम्मान एवं समर्पण एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में देखा जाता है। आचार्य विश्वमित्र जी की एक मात्र सन्तान बेटी पल्लवी अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न बेटी है। उसने पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम.ए. पास करके स्वर्ण पदक प्राप्त किया। स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि उनकी धर्मपत्नी शशि आर्या, बेटी पल्लवी एवं दामाद श्री सुनील भूटानी उनके नाती युवराज एवं गर्व सभी को सुख–समृद्धि एवं आत्मबल देकर अपनी कृपा का पात्र बनायें।

स्वामी जी के अतिरिक्त आचार्य रामस्वरूप शास्त्री ने पं. विश्वमित्र जी के जीवन की अनेक घटनाएँ सुनाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। अन्त में पल्लवी आर्या ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। स्मृति सभा में नगर के अनेकों गणमान्य महानुभावों तथा ब्रह्म महाविद्यालय के छात्रों ने भारी संख्या में भाग लिया।

राष्ट्र कल्याणार्थ पंचम चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर खरखौदा जिला–मेरठ, उत्तर प्रदेश में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने किया यज्ञ में भाग लेने वाले नगरवासियों को सम्बोधित

ग्राम–खरखौदा, जिला–मेरठ में 23 से 30 दिसम्बर, 2018 तक आयोजित राष्ट्र कल्याण पंचम चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर जो 23 दिसम्बर से प्रारम्भ होकर 30 दिसम्बर (रविवार) को सम्पन्न हुआ में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने प्रेरणादाई प्रवचनों से उपस्थित जनता को लाभान्वित किया।

यज्ञ के सायंकालीन सत्र में 24 दिसम्बर, 2018 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में श्रोताओं को प्रेरित किया कि वे यज्ञ को अपने जीवन का अंग बनायें। स्वामी जी ने यज्ञ की परिभाषा करते हुए कहा कि परोपकार ही यज्ञ है। अतः प्रत्येक मनुष्य को अथर्ववेद के इस मन्त्र के अनुरूप आचरण करते हुए जीवन में उन्नति करनी चाहिए।

ओ३म् स्वधो परिहितः श्रद्धया पर्युढ़ा,
दीक्षा गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठितः लोको निधनम्।

मन्त्र में कहा गया है कि मनुष्य को परोपकार, श्रद्धा, दीक्षा और यज्ञ को अपने आचरण में ले आना चाहिए। जो व्यक्ति इन चार सीढ़ियों पर चढ़कर अपने जीवन की यात्रा करता है वह प्रसन्नता, संतोष, निष्कामता के साथ हंसता हुआ संसार से विदा होता है। स्वामी आर्यवेश जी ने विस्तार से यज्ञ के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जिसे श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना।

पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने 25 दिसम्बर, 2018 को सायंकालीन यज्ञ के उपरान्त अपने प्रवचन में वेद के प्रसिद्ध मन्त्र जो ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना का प्रथम मन्त्र है –

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

अर्थात् हे ईश्वर! आप इस सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता हैं। आप सभी ऐश्वर्यों के स्वामी हैं, सब सुखों के दाता हैं और दुःखों को दूर करने वाले हैं आपसे हम विनम्रता से प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे सभी दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कर दीजिए और कल्याणकारक गुण, कर्म और स्वभाव हैं वो हमको प्राप्त कराईये। पं. माया प्रकाश जी ने इन तीनों ही प्रकार के संकटों से बचने के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हम परमात्मा से जो प्रार्थना करते हैं वह हमारी प्रार्थना अवश्य ही सुनते हैं, किन्तु प्रार्थना जिस चीज के लिए की गई है वह हमें तभी प्राप्त होगी जब हम पुरुषार्थ एवं प्रयत्न मनोयोग से करेंगे। पं. माया प्रकाश जी के विद्वतापूर्ण प्रवचन से श्रोतागणों द्वारा आन्नदित होकर उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा करके कृतज्ञता व्यक्त की गई। इस महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गुरुवचन शास्त्री गुरुकुल लाक्षागृह बरनावा एवं वेदपाठी श्रीमद्दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह बरनावा ने यज्ञ को बड़ी कुशलता के साथ सम्पन्न कराया।

Foto- Dikshender Arya

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत आर्य युवा महोत्सव का हुआ भव्य उद्घाटन

संस्कृत, संस्कृति की रीढ़ है और गुरुकुल संस्कृत के केन्द्र
– स्वामी आर्यवेश

संस्कृत के उत्थान से ही संस्कृति सुरक्षित रहेगी
– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

संस्कृत को प्राथमिक विद्यालयों में व्यवहार की भाषा बनाने के लिए हम कृत संकल्प हैं
– डॉ. वाचस्पति मिश्र

संस्कृत का प्रचार एवं प्रसार ही मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य
– आचार्य जयेन्द्र शास्त्री

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा 28 से 30 दिसम्बर, 2018 तक आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम सोरखा, सैक्टर–115, नोएडा में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत आर्य युवा महोत्सव का उद्घाटन समारोह 28 दिसम्बर, 2018 को प्रातः 9 बजे प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डॉ. वाचस्पति मिश्र ने की और समारोह का संयोजन डॉ. जयेन्द्र कुमार आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व सचिव प्रो. धर्मेन्द्र शास्त्री विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त महोत्सव में होने वाली प्रतियोगिताओं के नियंत्रक के रूप में प्रो. श्रीवत्स निगमालंकार, मोतीलाल नेहरू कॉलेज दिल्ली, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या कन्या गुरुकुल शिवगंज राजस्थान, डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल देहरादून, आचार्या धारणा याज्ञिकी आचार्या कन्या गुरुकुल प्रहलादपुर सोरों, उत्तर प्रदेश, आचार्या आदेश कन्या गुरुकुल वेदधाम, सूरखा, श्रीमती सीमा आर्या, डॉ. धनंजय शास्त्री आचार्य गुरुकुल पौंधा, देहरादून, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, आचार्य बृहस्पति नवप्रभात गुरुकुल उड़ीसा, डॉ. शिवशंकर, श्री रवि कुमार रेवाड़ी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार गाजियाबाद आदि विद्वान् एवं विदुषी भी मंच पर विराजमान थे।

युवा महोत्सव में देश के विभिन्न गुरुकुलों से सैकड़ों छात्र एवं छात्राएँ प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए पधारे हुए थे। उनके अतिरिक्त आर्य समाज नोएडा एवं कन्या गुरुकुल नोएडा के पदाधिकारी भी विराजमान थे जिनमें सर्वश्री रविन्द्र सेठ, कै. अशोक गुलाटी, महिपाल तोमर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डॉ. वाचस्पति मिश्र को इस समारोह के आयोजन के लिए साधुवाद एवं धन्यवाद देकर उनकी विशेष प्रशस्ति की। स्वामी जी ने बताया कि डॉ. वाचस्पति जी गुरुकुल प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातक हैं और प्रारम्भ से ही इनके व्यक्तित्व में प्रशासन की योग्यता रही है। आज यह देश के सबसे बड़े प्रान्त उत्तर प्रदेश के संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए संस्कृत को लाखों छात्र एवं छात्राओं के मध्य

व्यवहार की भाषा बनाने के लिए कृत संकल्प हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की प्रेरणा एवं तपस्या से अनेक प्रतिभावान युवा विद्वान् तैयार हुए हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में विशेष कार्य कर रहे हैं। डॉ. जयेन्द्र कुमार, प्रो. श्रीवत्स निगमालंकार, डॉ. शिवशंकर, डॉ. बृहस्पति, डॉ. श्याम प्रसाद, डॉ. सोमदेव आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने संस्कृत के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय संस्कृत भाषा में उपलब्ध है। वेद, उपनिषद्, दर्शन तथा समस्त अन्य ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही प्रकाशित हैं। अतः अपने प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के भण्डार से लाभ लेने तथा नये अनुसंधान करने के लिए आवश्यक है कि संस्कृत भाषा को हर स्तर पर अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि आधुनिक तकनीक में कम्प्यूटर सबसे महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में आविष्कृत हुआ है जिसके लिए माना जाता है कि संस्कृत भाषा ही सबसे अधिक उपयुक्त एवं उपयोगी भाषा है। यह भी सत्य है कि आई.ए.एस. की परीक्षा में जो प्रतिभागी संस्कृत विषय के साथ परीक्षा में बैठते हैं वे अवश्य ही इस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर बड़े–बड़े पदों पर आसीन होते हैं। अतः आवश्यकता है कि संस्कृत को वर्तमान पाठ्यक्रमों में स्कूल से लेकर विश्वविद्यालयों में प्राथमिकता के साथ पढ़ाया जाना चाहिए और इसके महत्व पर प्रकाश डालने के लिए ऐसे महत्वपूर्ण आयोजन होते रहने चाहिए।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने उद्बोधन में प्रतिभागी छात्र–छात्राओं को उत्साहित करते हुए कहा कि हार और जीत की परवाह किये बिना आप सभी को अपनी प्रस्तुति देनी चाहिए और लक्ष्य संस्कृत को पढ़ने–पढ़ाने, सीखने–सिखाने का होना चाहिए। स्वामी जी ने संस्कृत को वैदिक संस्कृति की रीढ़ बताया।

प्रो. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने संस्कृत भाषा में ही अपना व्याख्यान दिया और दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव के रूप में किये गये कार्यों का दिग्दर्शन कराते हुए डॉ. वाचस्पति जी से आग्रह किया कि आप उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के माध्यम से संस्कृत को विविध प्रकार से प्रचारित और प्रसारित करने का श्रम करें। उन्होंने कहा कि संस्कृत को आगे बढ़ाने के लिए गुरुकुलों को सशक्त बनाना होगा, क्योंकि गुरुकुलों से ही संस्कृत के विद्वान निकलते हैं। अतः गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. वाचस्पति मिश्र ने संस्कृत भाषा में बोलते हुए बताया कि उन्होंने उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को सामान्य व्यवहार में आने वाले संस्कृत भाषा के शब्द सीखाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रखी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि विद्यालय में पी.टी. करते समय परस्पर अभिवादन करते समय या व्यवहार में आने वाली वस्तुओं का सम्बोधन हम संस्कृत भाषा में क्यों नहीं कर सकते। जब हम बच्चों को अंग्रेजी या उर्दू आदि भाषाओं में शब्द बोलते हुए या सीखते हुए देखते हैं तो संस्कृत के शब्द सीखने में क्या कठिनाई है। उन्होंने इस आर्य युवा महोत्सव में पधारने के लिए स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी तथा समस्त विद्वानों एवं विदुषियों का आभार व्यक्त किया और संस्कृत संस्थान की ओर से सबको शॉल भेंटकर सम्मानित किया।

उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलन का कार्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. वाचस्पति मिश्र जी तथा अन्य विद्वानों ने किया। इस युवा महोत्सव में संस्कृत भाषा प्रतियोगिता, संस्कृत गीत प्रतियोगिता, संस्कृत सद्यः भाषण प्रतियोगिता, संस्कृत प्रश्न मंच प्रतियोगिता, संस्कृत नाटक प्रतियोगिता, अष्टाध्यायी सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता, क्रीड़ा प्रतियोगिता, कबड्डी बालिकाः, कबड्डी बालकाः, योगासन प्रतियोगिता बालिकाः एवं बालकाः, संस्कृति कवि सम्मेलनम् आदि आकर्षक कार्यक्रम चलेंगे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।